19

अब्राहम के कदमों की लीक पर चलना

(4:17ख-25)

रोमियों 4 में हमें बताया गया है कि ''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'' (आयत 3)। फिर हमें ''अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर चलने'' की चुनौती दी जाती है (आयत 12)।[1] इन शब्दों को पढ़ते हुए मुझे अपने पिता के पीछे पीछे चलते एक छोटे लड़के का ध्यान आता है, जो अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने के लिए लम्बी-लम्बी छलांगें लगाता है। हमारे दमाद डैन लवजोय ने हाल ही में अपना ''फ़ादर्स डे'' मनाया था।[2] हमारी बेटी एंजी ने उसके लिए एक कार्ड बनाया था जिसमें डैन के बड़े जूतों के साथ उनके बेटे अलाइजा के छोटे-छोटे जूते उसके पीछे दिखाए गए। उस तस्वीर के नीचे लिखा हुआ था, ''डैडी, मैं आपके पीछे-पीछे आ रहा हूं।'' डैन का उत्तर था, ''बहुत अच्छे पर यह थोड़ा भयभीत करने वाला है।''

''अब्राहम ... के विश्वास की लीक पर चलने'' का क्या अर्थ है? रोमियों 4 के अंतिम भाग में पौलुस ने अब्राहम के विश्वास की प्रकृति पर चर्चा की। रिचर्ड बैटे ने लिखा है कि ''पौलुस ने यहां विश्वास की ऐसी परिभाषा दी है जो अपने लेखों में उसने और कहीं नहीं दी।[3] उसकी परिभाषा को संक्षिप्त और शैक्षिक ढंग में नहीं कहा गया, बल्कि यह अब्राहम के उत्तर का विवरण है, जिसमें विश्वास का चरित्र दिखाया गया है।''[4] इस पाठ में हम उसकी समीक्षा करेंगे जो पौलुस ने अब्राहम के विश्वास के बारे में कहा। ऐसा करते हुए याद रखें कि ऐसा ही विश्वास आप में और मुझ में होना चाहिए।

अब्राहम का विश्वास (4:17ख-22)

परमेश्वर के व्यक्तित्व में विश्वास (आयत 17ख)

सबसे पहले आइए ध्यान से देखते हैं कि अब्राहम का विश्वास परमेश्वर के *व्यक्तित्व* में था। हमारा वचन पाठ आयत 17 के अंतिम भाग से आरम्भ होता है। यह वाक्य के मध्य में है सो हमें वाक्य के आरम्भ से लेना पड़ेगा:

> इसी कारण प्रतिज्ञा [यह कि अब्राहम और उसके वंशज संसार के वारिस होंगे] विश्वास के द्वारा मिलती है, कि अनुग्रह की रीति पर हो, कि वह [अब्राहम की] प्रतिज्ञा उसके सब [आत्मिक] वंश के लिए दृढ़ हो, ... उनके लिए जो अब्राहम के समान विश्वास वाले हैं; वही तो हम सब का पिता है (आयत 16)।

आयत 16 में अंतिम बात की वचन से पुष्टि करने के बाद (देखें आयत 17क), पौलुस ने इस पाठ के लिए वचन के पहले शब्द जोड़े। उसने कहा कि ''उस परमेश्वर के साम्हने जिस पर उस

ने विश्वास किया'' (आयत 17ख) अब्राहम हम सब का पिता है। ''परमेश्वर'' शब्द को रेखांकित कर लें क्योंकि अब्राहम ने *परमेश्वर* पर विश्वास किया।

यह वचन परमेश्वर के बारे में अब्राहम द्वारा विश्वास की गई दो विशेष सच्चाइयों को बताता है: ''जो मरे हुओं को जिलाता है,[5] और जो बातें हैं ही नहीं, उन का नाम ऐसे लेता है, कि मानो वे हैं'' (आयत 17ग, घ)। संदर्भ में ''मरे हुओं को जिलाता है'' (आयत 17ग) का संकेत अब्राहम और सारा की ''मृत'' देहों की ओर है (आयत 19); परमेश्वर ने उनकी देहों को ''जीवित'' करके उन्हें एक पुत्र पाने के योग्य बनाना था। अब्राहम के जीवन की बाद की एक घटना में इसका संकेत भी हो सकता है, जब उसे बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट करने के लिए कहा गया था (उत्पत्ति 22)। इब्रानियों के लेखक ने कहा है कि अब्राहम इस परीक्षा में सफल रहा था ''क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए'' (इब्रानियों 11:19क)। ''मरे हुओं में से जिलाए'' शब्द और अध्याय की अंतिम आयत का अनुमान हो सकते हैं, जो मसीह के मरे हुओं में से जी उठने की बात करता है (रोमियों 4:25)।

अद्‌भुत बात यह है कि अब्राहम ने विश्वास किया कि परमेश्वर मरे हुओं को जीवन दे *सकता* है। परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया था; इसके अलावा हमें ऐसे किसी आश्चर्यकर्म का पता नहीं है जो अब्राहम ने देखा हो। लगभग पक्का ही है कि उसने कभी किसी मरे हुए को जी उठे नहीं देखा था। तौभी अब्राहम का विश्वास था कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और यह कि यदि परमेश्वर चाहे तो वह मरे हुओं को जीवित कर सकता है!

फिर, अब्राहम ने ऐसे परमेश्वर पर विश्वास किया कि ''जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं'' (आयत 17ग)। यह उत्पत्ति 1 के हवाले से हो सकता है जहां परमेश्वर ने बात की और उस संसार को अस्तित्व में लाया जो पहले मौजूद नहीं था। संदर्भ में यह अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा (ओं) की बात हो सकती है। अब्राहम का पुत्र था नहीं, परन्तु परमेश्वर ने उसे अस्तित्व में लाया। परमेश्वर ने ''एक बड़ी जाति'' (इस्राएल) की बात की जो थी नहीं और इसे अस्तित्व में लाया (उत्पत्ति 12:2; 46:3)। परमेश्वर ने अब्राहम की आत्मिक संतान (मसीही लोगों) की भी बात की और अन्त में, मसीह के द्वारा उन्हें अस्तित्व में लाया (गलातियों 3:29)।

कहने का अर्थ यह है कि जहां तक अब्राहम की बात थी, यदि परमेश्वर ने कुछ कहा तो उसे किया। यदि परमेश्वर ने कहा कि कुछ होने वाला है, तो बिना किसी संदेह के यह *होना* था।

इस बात को समझें कि अब्राहम का विश्वास *अपने आप* में नहीं बल्कि परमेश्वर *में* था। अब्राहम का विश्वास *अपने* विश्वास में भी नहीं बल्कि अपने प्रभु में था। हम में से कई लोग इतने काम पर केन्द्रित होते हैं कि यदि हम सावधान नहीं हैं तो हम यह सोचने लग सकते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण बात हमारे विश्वास की सामर्थ है। विश्वास ''कमज़ोर'' (आयत 19) या ''शक्तिशाली'' (आयत 20) हो सकता है और हमारा विश्वास बढ़ना आवश्यक है (देखें आयत 20)।[6] तौभी धर्मी ठहराए जाने के सम्बन्ध में हमारे विश्वास की गिनती या गुण उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना हमारे विश्वास का *केन्द्र*। जो मैं कहने की कोशिश कर रहा हूं उसे समझने में सहायता के लिए शायद यह उदाहरण सहायक हो।

कल्पना करें कि आप एक गहरी, चौड़ी खाई के पास आए हैं जिसे पार करना आवश्यक है। दूसरी ओर पहुंचने के तीन ढंगों को दृश्यमान करें। आप छलांग लगाकर पार जाने की कोशिश कर

सकते हैं; यह अपने आप में आपके विश्वास को दिखा सकता है। उफ़, यह क्या हुआ, आप तो खाई की गहराइयों में कूद गए! दूसरा ढंग कसकर ऊपर बंधी रस्सी का इस्तेमाल करना हो सकता है जो इतनी लम्बी है कि उसे खाई के दूसरी ओर पहुंचाया जा सकता है। आप रस्सी के सिरे को पकड़कर दूसरी ओर झूलकर जाते हैं। इस ढंग में दोहरे विश्वास पर केन्द्रित होना शामिल है:

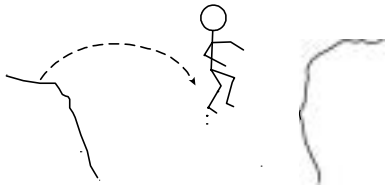

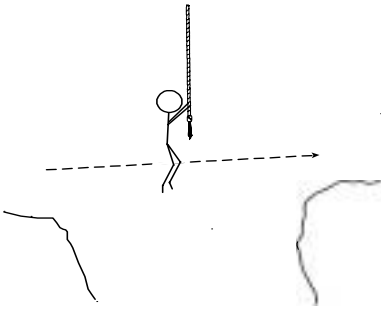

आपको विश्वास है कि रस्सी आप को थामे रखेगी, परन्तु आप को अपने आप पर भी विश्वास है कि आप दूसरी ओर सुरक्षित पहुंचने तक इसे पकड़कर रख सकते हैं। तीसरा ढंग जिस पर मैं विचार करना चाहता हूं वह पुल से खाई को पार करना है। आप पुल के पार चलकर जाते हैं क्योंकि आपका विश्वास है कि पार करते समय पुल आपको सम्भालेगा। यह आपका विश्वास नहीं है जो आपको सहायता देता है। आपका विश्वास आपको सहारा नहीं देता, बल्कि पुल देता है। शायद आप दिलेरी से पार कर लेते हैं, या शायद आप घबराते हुए उसे पार करते हैं। जैसे भी हो आप को थामे रखने वाला आपके विश्वास की गिनती या गुण नहीं, बल्कि पुल है।

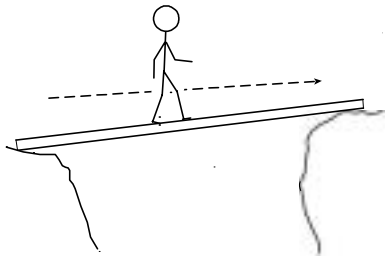

मैं यह ज़ोर देने की कोशिश कर रहा हूं कि अब्राहम के विश्वास का केन्द्र अपना आप नहीं था। यह उसका विश्वास भी नहीं था। (जैसा कि हम देखेंगे, अब्राहम का विश्वास सिद्ध नहीं था।) बल्कि अब्राहम का *परमेश्वर* में विश्वास था (आयत 17ख)। इसी प्रकार हमारा विश्वास परमेश्वर पर केन्द्रित होना चाहिए। चाहे हम आत्मिक रूप से मरे हुए ही क्यों न हों, वह हमें जीवन दे सकता है (इफिसियों 2:5)। एक दिन वह हमारी मृत देहों को नया जीवन देगा। इसके अलावा वह हमें और हमारे जीवन में पाई जाने वाली क्षमता को देख सकता है, तब भी जब हम पापी हैं और ''उसे अस्तित्व में ला सकता है, जो है ही नहीं।''

परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास (आयतें 18, 19)

अब्राहम का विश्वास परमेश्वर पर टिका हुआ था, जिस कारण, ''उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो'' (रोमियों 4:18)। पूरी आयत को देखने से पहले हमें उस वाक्यांश को देखने के लिए कुछ समय बिताना पड़ेगा जिसके साथ यह आरम्भ होती है: ''निराशा में भी

आशा'' (आयत 18क)। रोमियों की पुस्तक में ''आशा'' शब्द हमें यहां पहली बार मिलता है, परन्तु यह अन्तिम बार नहीं होगा (देखें 5:2, 4, 5; 8:20, 24, 25; 12:12; 15:4, 12, 13, 24)। ''आशा'' का अनुवाद *elpis* से किया गया है, जो ''निर्णायक ढंग से एक पौलुसी[7] शब्द है, ... वह शब्द जो नये नियम की किसी भी अन्य पुस्तक से रोमियों की पुस्तक में अधिक बार मिलता है।''[8] आशा का निकट सम्बन्ध विश्वास से है (देखें इब्रानियों 11:6), परन्तु दोनों एक नहीं। जिस आशा की बात पालुस ने लिखी वह *इच्छा* और *उम्मीद* को मिला देता है, यानी दोनों को मिलाकर आशा बनता है।[9] मुझे दस लाख डॉलर पाने की इच्छा हो सकती है; परन्तु क्योंकि मुझे इसे पाने की उम्मीद नहीं है इसलिए मुझे यह आशा नहीं है। एक दोषी हत्यारा ज़हर के इंजेक्शन से मरने की उम्मीद कर सकता है; परन्तु वह इसकी इच्छा नहीं करता सो यह आशा नहीं है। मसीह में हमें आशा है यानी इच्छा *के साथ* उम्मीद है।

पौलुस ने ''निराशा में भी आशा'' में विश्वास की बात की जिस में *सांसारिक* दृष्टिकोण से अब्राहम को पुत्र पाने की कोई आशा नहीं थी। उसे संतान की *इच्छा थी,* परन्तु ''मरे हुए से शरीर'' (रोमियों 4:19) से उसके पास संतान की उम्मीद रखने का कोई सांसारिक कारण नहीं था। तौभी *स्वर्गीय* दृष्टिकोण से, परमेश्वर ने कहा कि उसकी कई संतानें होंगीं, सो अब्राहम ने केवल पुत्र पाने की इच्छा ही नहीं की बल्कि उसने इस की *उम्मीद* भी की। इस कारण पौलुस ने कहा, ''उस ने निराशा में भी आशा रख कर उस में विश्वास किया ...'' (आयत 18)। यूजीन पीटरसन ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''जब सब कुछ आशाहीन था, तब भी अब्राहम ने विश्वास किया ...'' (MSG)।

''निराशा में भी आशा रख कर [अब्राहम ने] विश्वास किया, इसलिए कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का [शारीरिक और आत्मिक दोनों ही] पिता हो।'' (आयत 18)। इस आयत में ''बहुत सी जातियों का पिता'' का हवाला उत्पत्ति 17:4, 5 से लिया गया है, जब कि यह उद्धरण उत्पत्ति 15:5 से है। वहां परमेश्वर ने अब्राहम को बताया था कि उसके वंशज आकाश के तारों की तरह अनगिनत होंगे। अब्राहम ने भरोसा किया कि ये प्रतिज्ञाएं सच्ची होंगी, चाहे ऐसा लगता था कि वे किसी प्रकार पूरी नहीं हो सकतीं।

संसार के लोगों के लिए ऐसा विश्वास तर्कहीन, बेतुका है। वे यह ज़ोर देते हैं कि ऐसा तो ''वास्तविकता से बिल्कुल परे'' है अर्थात यह ''तथ्यों का सामना'' नहीं कर सकता। अगली आयत हमें आश्वस्त करती है कि अब्राहम के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ: ''वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ।[10]'' (4:19)। इस आयत की समीक्षा करते हुए हमें इस में आने वाली कठिनाई से परिचित होना आवश्यक है:

> वचन से जुड़ी अनिश्चितता है कि हमें ''अपने मरे हुए से शरीर'' पढ़ना चाहिए या ''उसने अपने शरीर पर ध्यान नहीं दिया जो अब मरा हुआ था'' (KJV)। यह दिलचस्प है कि इन दोनों तरह से पढ़ने पर जिन्हें एक दूसरे को नकारता है, दोनों ही अच्छी तरह प्रमाणित हैं और प्रत्येक अच्छा अर्थ देता है। एक मामले में अब्राहम ने अपने शरीर को मरा हुआ नहीं माना, क्योंकि परमेश्वर ने इस के द्वारा अपनी इच्छा को पूरा करना था। दूसरे में उस ने अपने शरीर की अक्षमता को पूरी तरह ध्यान में रखा और माना कि परमेश्वर इसके द्वारा अपनी इच्छा को पूरी करेगा।[11]

इस आयत को जैसे भी लें, परमेश्वर ने निन्यानवे साल के अब्राहम को बताया कि उसके एक पुत्र होगा (उत्पत्ति 17:1, 16), बच्चों के पालन-पोषण में (इब्रानियों 11:12 से तुलना करें) उसने इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं किया कि उसकी देह ''मरी हुई सी [*nekroo* का एक रूप]'' थी। न उसने ''सारा की गर्भ की मरी हुई [*nekroo* का एक रूप] सी दशा'' को नज़रअंदाज़ किया। ''जानकर'' शब्द पर ध्यान दें। सारा की कोख शुरू से ''मरी हुई'' थी, परन्तु अब्राहम की देह ''अब'' मरी थी। बीते समय में उसकी देह संतान उत्पन्न करने के सम्बन्ध में ''मरी हुई'' नहीं थी (उत्पत्ति 16:4क), परन्तु अब यह मरी हुई थी।[12]

अब्राहम ने ''तथ्यों'' को देखा कि वह और सारा शारीरिक तौर पर संतान उत्पन्न करने के अयोग्य हैं। उसने ''वास्तविकता'' का सामना किया कि संतान पाने का कोई सांसारिक ढंग नहीं है। तौभी उसने विश्वास किया कि उसके और सारा के एक पुत्र होगा, कि उसकी संतान तारों की तरह अनगिनत होगी। क्यों? क्योंकि उसे समझ आ गया कि शारीरिक तथ्य सभी तथ्य नहीं हैं; वास्तव में वे उपलब्ध तथ्यों से सब से कम महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा उसे यह भी समझ आया कि एक वास्तविकता है यानी परमेश्वर की वास्तविकता पृथ्वी की वास्तविकता से बहुत ऊपर है। अब्राहम ने शारीरिक तथ्यों और शारीरिक वास्तविकता को नज़रअंदाज़ नहीं किया, परन्तु उस ने उन के द्वारा रोके जाने या सीमित होने से इनकार कर दिया। उस ने सर्वशक्तिमान परमेश्वर अर्थात उस परमेश्वर में विश्वास किया जो वह सब करने में सक्षम था जो उसने कहा था (देखें रोमियों 4:17; उत्पत्ति 17:1; लूका 1:37)।

यदि हमें अब्राहम के विश्वास के पदचिह्नों पर चलना हो, तो हमें अपने इर्द-गिर्द नहीं बल्कि अपने ऊपर भी अर्थात परमेश्वर की ओर देखना आवश्यक है। हमें जीवन की समस्याओं को अनदेखा नहीं करना चाहिए। परन्तु हम उन से प्रभावित होने से इनकार कर सकते हैं। आखिर हमारा *शक्तिशाली* परमेश्वर है जो प्रेमी पिता है। यिर्मयाह ने कहा, ''[परमेश्वर के] लिये कोई काम कठिन नहीं है'' (यिर्मयाह 32:17ग)। स्वर्गदूत ने मरियम को बताया, ''क्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता'' (लूका 1:37)। हमें ''रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलना'' है (2 कुरिन्थियों 5:7)।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास (आयतें 20, 21)

अब्राहम ने परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास ही नहीं किया बल्कि उसे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में भरोसा भी था: ''और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया'' (रोमियों 4:20क)। ''परमेश्वर की प्रतिज्ञा'' यह प्रतिज्ञा है कि अब्राहम और उसके वंशज ''जगत के वारिस होंगे'' (आयत 13), जो ऐसी ''पैकेज'' प्रतिज्ञा थी जिस में अब्राहम के पुत्र होने और बहुत सी संतान होने की प्रतिज्ञा भी थी। बेशक उस प्रतिज्ञा का पूरा होना असम्भव लगता था, परन्तु इस पुरखे ने ''अविश्वासी होकर संदेह नहीं किया।'' ''संदेह किया'' का अनुवाद *diakrino* से किया गया है, जो ''हिचकिचाना'' या ''शक करना'' के अर्थ वाला एक मिश्रित शब्द है।[13]

अविश्वास में डांवाडोल होने के बजाय, अब्राहम ''विश्वास में दृढ़ हुआ'' (आयत 20ख)। ''दृढ़ हुआ'' का अनुवाद *endunamoo* (*en* [''में''] के साथ *dunamis* [''शक्ति'']) से किया गया है।[14] इस आयत में *endunamoo* कर्मवाच्य में है,[15] सो इसका अनुवाद ''सामर्थ दी

गई'' या ''शक्ति दी गई'' थी हो सकता है (देखें NIV; NKJv)। ''विश्वास में'' वाक्यांश का अनुवाद *te* (''the'') *pistei* (''faith'') से किया गया है, जो बिना उपसर्ग के सम्प्रदानकारक में है।[16] NASB तथा कई और मानक संस्करणों में उपसर्ग ''in'' दिया गया है, परन्तु कई संस्करणों में ''through'' या ''by'' जैसे शब्द दिए गए हैं। ''यूनानी को समझा जा सकता है जिसमें 'वह अपने विश्वास में दृढ़ हुआ' (उसका विश्वास मज़बूत हुआ), या 'अपने विश्वास के द्वारा वह मज़बूत हुआ' है।''[17] जैसे भी हो प्रभु में और उसकी प्रतिज्ञाओं में भरोसा रखने के विषय में अब्राहम मज़बूत हुआ। जैसे शारीरिक अभ्यास से शरीर मज़बूत होता है, वैसे ही विश्वास के ''अभ्यास करने'' से (इस पर निर्भर रह कर और इस पर काम करके) वह विश्वास मज़बूत होगा।

अब्राहम ने ''विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की [*doxa*]'' (आयत 20ख, ग)। परमेश्वर की ''महिमा की'' का अर्थ प्रभु को वह महिमा देना है, जिसके वह योग्य है। अध्याय 1 में पौलुस ने उन लोगों का वर्णन किया था जिन्होंने ''परमेश्वर को जानने पर भी ... परमेश्वर के योग्य बढ़ाई और धन्यवाद न किया'' (रोमियों 1:21क)। अब्राहम उन नाशुक्रगुज़ार लोगों में से नहीं था, उसने प्रभु को महिमा दी। मुझे और आप को इस सम्बन्ध में पिता अब्राहम के पदचिह्नों पर चलने की आवश्यकता है। ''*उसी की* महिमा अब भी हो और युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (2 पतरस 3:18ख)।

यह हमें आयत 21 पर ले आता है जो पूर्ण भरोसे के संक्षिप्त कथन, अब्राहम के विश्वास का सार है: ''और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को भी सामर्थी है।'' ''निश्चय जाना'' *plerophoreo* (*pleos* [''पूर्ण''] के साथ *phoreo* [''सहना'']) से लिया गया है।[18] इस आयत में *plerophoreo* का अर्थ ''*निश्चितता* को पाना'' है।[19]

अब्राहम ने विश्वास किया कि परमेश्वर वह करने में ''सक्षम था'' जिसकी उसने प्रतिज्ञा की थी। कई बार मैंने प्रतिज्ञा की परन्तु उसे पूरा करने में नाकाम रहा। प्रतिज्ञा करते समय मेरी मंशा इसे पूरा करने की थी और मैंने इसे पूरा करने के लिए पूरी कोशिश की। परन्तु अन्त में, मैं इसे पूरा नहीं कर पाया। हमारा परमेश्वर ऐसा नहीं है। जब वह कोई प्रतिज्ञा करता है, तो वह इसे पूरा करने के *योग्य* होता है। पुराने और नये दोनों नियमों का एक विषय यह है कि हमारा परमेश्वर ''योग्य है'' (देखें दानिय्येल 3:17; रोमियों 11:23; 14:4; 2 कुरिन्थियों 9:8; इब्रानियों 7:25)। ''सामर्थी'' का अनुवाद *dunatos* से किया गया है, जो ''शक्ति'' के लिए शब्द *dunamis* वाले शब्द के परिवार से ही है। हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान अर्थात सबसे शक्तिशाली है! TEV में कहा गया है कि अब्राहम ''को पूरा निश्चय था कि परमेश्वर उसे पूरा करने के योग्य होगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है।''

अब्राहम ने केवल यही विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर अपनी की हुई प्रतिज्ञा को पूरा कर *सकता* है बल्कि उसने यह भी विश्वास किया कि परमेश्वर इसे पूरा *करेगा*। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर *विश्वासयोग्य* है (देखें व्यवस्थाविवरण 7:9; 1 कुरिन्थियों 1:9)। एक काम जो परमेश्वर नहीं कर सकता है वह झूठ बोलना है (तीतुस 1:2; देखें इब्रानियों 6:18)। लोग हमेशा अपना वचन नहीं निभाते, परन्तु परमेश्वर निभाता है। जो वायदा वह करता है उसे अवश्य पूरा करेगा!

क्या अब्राहम के लिए यह विश्वास करना कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा आसान

था? डॉनल्ड बार हाउस ने दिखाया है कि साल दर साल बिना संतान के रहना अब्राम (जैसा कि उसे पहले जाना जाता था) के लिए कितना निराश करने वाला होगा।

> धनवान व्यपारियों के कारवां जब देश में आते, तो वे अब्राम के कुओं पर रुकते थे। मुसाफिरों को खाना बेचा जाता था। शाम के समय व्यापारी अब्राम के तम्बू में अब्राम से भेंट करने को आते होंगे। उनके बीच सवाल कुछ इस प्रकार से होते होंगे। आप कौन हैं? आप की उम्र क्या है? आप यहां कब से रह रहे हैं? व्यापारी द्वारा अपना परिचय देने के बाद अब्राम को भी अपना नाम बताना पड़ता होगा कि अब्राम कितनों का पिता है। सैकड़ों, हज़ारों बार ऐसा हुआ होगा और हर बार पहले से अधिक दुखी करने वाला होगा। ''हे, बहुतों के पिता! मुबारक! और आप के कितने बेटे हैं?'' और उत्तर अब्राम के लिए लज्जित करने वाला होता था: ''कोई नहीं।'' ''बहुतों का पिता,'' परन्तु किसी का पिता नहीं। वह पुरखा था! उसकी बात कानून की तरह थी; उसके बहुत से पशु और कई सेवक थे, परन्तु संतान कोई नहीं थी, फिर भी उसका नाम ''बहुतों का पिता'' था।[20]

तौभी अब्राहम ने ''निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को भी सामर्थी है'' (रोमियों 4:21)।

शायद मुझे इस बात पर ध्यान दिलाना चाहिए कि अब्राहम को ''पूरा यकीन था'' कि परमेश्वर ने जो *प्रतिज्ञा* की थी वह उसे पूरा करने में सामर्थी है। अब्राहम का विश्वास किसी ऐसी बात पर नहीं था जिसकी उसने कल्पना की हो या जिसका उसने सपना देखा था। बल्कि यह मज़बूती से उस बात के आधार पर था जो परमेश्वर ने *कही* थी। अध्याय 10 कहता है कि ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (आयत 17; यूहन्ना 17:20ख)। हमारा विश्वास न केवल परमेश्वर पर केन्द्रित होना आवश्यक है बल्कि यह बाइबल पर आधारित भी होना भी आवश्यक है।

अब तक आप सोच रहे होंगे, ''काश मेरा विश्वास अब्राहम के विश्वास जैसा होता! दृढ़संकल्पी विश्वास जो कभी डगमगाया नहीं, पक्का विश्वास जिसने कभी संदेह नहीं किया, विरागी विश्वास जो कभी विचलित नहीं हुआ!''[21] मैं यह प्रभाव नहीं छोड़ना चाहता कि अब्राहम का विश्वास सिद्ध था। यदि आप को लगता है कि अब्राहम का विश्वास सिद्ध था इसलिए आपका विश्वास सिद्ध होना आवश्यक है तो आप अपने लिए एक असम्भव मानक ठहरा रहे हैं। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको केवल निराशा और हताशा हाथ लगेगी।

नहीं, अब्राहम का विश्वास सिद्ध नहीं था। वह मनुष्य था जिसका अर्थ यह है कि वह सिद्ध नहीं था और न उसका विश्वास सिद्ध था। उत्पत्ति 15, क्योंकि अब्राहम की अभी तक कोई संतान नहीं थी, इसलिए उसने परमेश्वर को सुझाव दिया कि उसकी दासी से उसकी संतान होनी चाहिए (आयतें 2, 3)। उत्पत्ति 17 में परमेश्वर के यह कहने के बाद कि सारा के पुत्र होगा (आयतें 15, 16), अब्राहम मन ही मन हंसा और विचार करने लगा, ''क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगी और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?'' (आयत 17)। फिर उसने परमेश्वर को विश्वास दिलाने की कोशिश की कि वह उसके वारिस के रूप में इश्माइल को ग्रहण कर ले (आयत 18)। साफ़ है कि महीनों के सालों में और सालों के दशकों में बदलने पर अब्राहम को यह प्रतिज्ञा समझ

नहीं आई थी कि वह ''बहुतों का पिता'' होगा।

तो फिर पौलुस ने क्यों कहा कि अब्राहम ने ''अविश्वासी होकर संदेह नहीं किया'' कि उसने ''निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को भी सामर्थी है'' (रोमियों 4:20, 21) ? इस प्रश्न का उत्तर देने का एक ढंग यह ज़ोर देना होगा कि अब्राहम को उतनी दिक्कत इस बात से नहीं थी कि प्रतिज्ञा क्या है जितनी इससे कि यह पूरी *कैसे* होगी। मैं एक समानता बनाने की कोशिश करता हूं। अध्याय 8 में पौलुस ने कहा कि ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिल कर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं'' (आयत 28क)। जब जीवन हमें कुचल डालने की धमकी देता है तो हमें आश्चर्य हो सकता है कि परमेश्वर उस प्रतिज्ञा को पूरी *कैसे* कर सकता। तौभी यदि हम दृढ़ निश्चय से उस प्रतिज्ञा से चिपके रहें और प्रभु के विश्वासयोग्य बने रहें, तो कहा जा सकता है कि हम ''डगमगाए'' नहीं हैं।

अब्राहम को अपने विश्वास के साथ संघर्ष करना पड़ा हो सकता है, उसकी अपनी कमज़ोरियां थीं, यहां तक कि उसके मन में थोड़ी देर के लिए संदेह भी आया परन्तु उसने अपना ध्यान कभी परमेश्वर से हटाया नहीं। याद रखें कि अब्राहम के विश्वास की गिनती और गुण उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना उसके विश्वास का केन्द्र। अब्राहम के विश्वास के पदचिह्नों में चलते हुए आपके मन में सवाल उठ सकते हैं तो कई बार संदेह भी हो सकता है। जब ऐसा हो तो प्रार्थना में बने रहें, परमेश्वर के वचन को पढ़ते रहें, परमेश्वर की इच्छा पर चलते रहें। अब्राहम की तरह ही प्रभु के निकट रहें और आप भी ''विश्वास में दृढ़'' हो सकते हैं (रोमियों 4:20)।

पौलुस ने फिर से उत्पत्ति 15:6 से उद्धृत करते हुए अब्राहम के जीवन की अपनी समीक्षा समाप्त की: ''इस कारण, यह [अब्राहम का विश्वास] उसके लिए धार्मिकता गिना गया [*logizomai*]'' (रोमियों 4:22)। उसका विश्वास सिद्ध नहीं था परन्तु फिर भी यह विश्वास था। उस विश्वास के कारण परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी गिना।

अब्राहम के अनुयायी (4:23-25)

फिर पौलुस ने अपने पाठकों के लिए और हमारे लिए प्रासंगिकता बनाई। ''और यह वचन, कि विश्वास उस [अब्राहम] के लिए धार्मिकता गिना गया [*logizomai*], न केवल उसी के लिए लिखा गया वरन हमारे लिए भी जिन के लिए विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा'' (आयतें 23, 24क)। उत्पत्ति 15:6 केवल ''[अब्राहम के] स्मरण के रूप में'' ही नहीं लिखा गया था ''कि वह लोगों के मनों में जीवित रहे।''[22] परमेश्वर ने मूसा से ये वचन इसलिए लिखवाए क्योंकि मूसा के समय के लोगों को कुछ *सिखाना* चाहता था और पौलुस ने कहा कि परमेश्वर आज भी लोगों को उन के द्वारा सिखाना चाहता है। इतिहास को दोहराने में पौलुस की कोई दिलचस्पी नहीं थी परन्तु मनों और जीवनों को बदलने की उसकी बड़ी इच्छा थी।

उत्पत्ति 15:6 ''हमारे लिए भी जिनके लिए यह विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा [*logizomai*]'' (4:24क, ख) लिखा गया था। हमारा विश्वास हमारे लिए वैसे ही धार्मिकता गिना जाएगा जैसे अब्राहम का विश्वास गिना गया था क्योंकि हम दोनों अनुग्रह और विश्वास के प्रबन्ध के अधीन हैं। 22 से 24 आयतों में [*logizomai*] शब्द का तिहरा इस्तेमाल हमें ''परमेश्वर का अद्‌भुत 'गिनती करने का प्रबन्ध' के तिहरे इस्तेमाल का प्रबन्ध'' स्मरण कराता है। CJB में है

''परन्तु वचन ... हमारे लिए भी लिखे गए थे, जिनके खाते में भी निश्चय ही डाला जाएगा'' (आयतें 23, 24क)। आयत 25 में AB में लिखा है कि मसीह ''हमारे खाते को बराबर करते हुए'' मरा। रोमियों की पुस्तक में परमेश्वर के ''पुस्तकें रखने'' के ढंग के अन्तिम हवालों में से एक यह है, परन्तु यह पत्र के शेष भाग के लिए हवाला दे देता है।

परमेश्वर में विश्वास ...

पौलुस ने बात की थी कि अब्राहम ने क्या विश्वास किया अब उसने इस चर्चा का समापन इस समीक्षा के साथ किया कि आपको और मुझे क्या विश्वास करना है। जो हम विश्वास करते हैं और जो अब्राहम ने विश्वास किया था उसकी तुलना का संकेत है।

यह कहने के बाद कि उत्पत्ति 15:6 *हमारे* लिए लिखी गई थी, पौलुस ने स्पष्ट किया कि वह किस की बात कर रहा है। ''जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया'' (आयत 24ग)। अब्राहम ने परमेश्वर में विश्वास किया जो ''मरे हुओं को जिला'' सकता है (आयत 17), और हमें भी वैसा ही विश्वास रखने की आवश्यकता है। अध्याय में इससे पहले मसीह के परोक्ष हवाले लिए गए थे, परन्तु यहां ''यीशु'' नाम पहली बार प्रगट होता है।

यीशु का जी उठना हमारे विश्वास का केन्द्र है। अध्याय 1 में पौलुस ने कहा कि यीशु ''मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (आयत 4ख)। अध्याय 10 में उसने कहा कि उद्धार पाने के लिए आवश्यक है कि ''तू ... अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने [यीशु को] मरे हुओं में से जिलाया'' (आयत 9)। बिना पुनरुत्थान के, हमें कोई ''जीवित आशा'' नहीं है (1 पतरस 1:3) और हमारा विश्वास ''व्यर्थ है'' (1 कुरिन्थियों 15:17)।

फिर यीशु के विषय में पौलुस ने कहा कि ''वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया,[23] और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया'' (आयत 25)।[24] जब पौलुस ने कहा कि यीशु ''पकड़वाया गया,'' तो यह समझ आ जाता है कि वह क्रूस पर दिए जाने के लिए अपने शत्रुओं के हाथ ''दिए गया'' था। इस कारण NIV में ''वह मरने के लिए दिया गया था'' है।

''पकड़वाया गया'' का अनुवाद *paradidomi* (*para* [''के साथ''] जमा *didomi* [''देना'']) से किया गया है। इस शब्द का एक रूप यीशु के शत्रुओं को दिए जाने के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया गया था परन्तु आयत 25 यीशु के शत्रुओं की बात नहीं करती। ध्यान दें कि ''वह *हमारे अपराधों के लिए* पकड़वाया गया।'' मसीह के विरोधियों को ''हमारे अपराधों'' में कोई दिलचस्पी नहीं थी; उनकी रुचि तो उससे पीछा छुड़वाने में थी, जिससे वे घृणा करते थे। आयत 25 *परमेश्वर* के यीशु को हमारे ''प्रायश्चित'' के रूप में देने की बात करती है (3:25)। अध्याय 8 में पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया'' (आयत 32क)।

आयत 25 की कई विशेषताएं टीकाकारों को उलझन में डालती हैं। उनमें से एक उपसर्ग *dia* का दोहराया जाना है। (NASB में इसका अनुवाद ''because of'') हुआ है: ''He ... was delivered over *because of* our trangressions, and ... raised *because of* our justification.'' पौलुस ने स्पष्टतया दोनों वाक्यों को समानांतर बनाना चाहा। समस्या यह है कि

''transgressions'' (अपराध) और ''justification'' (धर्मी ठहराया जाना) एक ही वर्ग में नहीं आते क्योंकि वे विपरीत शब्द हैं। पौलुस ने स्पष्टतया अपने पाठकों से वाक्य के हर भाग में विचार को पूरा करने की उम्मीद की: मसीह मरने के लिए दे दिया गया ''क्योंकि'' हमारे अपराधों के दोष को मिटाने के लिए ऐसा आवश्यक था, और वह मुर्दों में से जी उठा ''क्योंकि'' हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए यह आवश्यक था।

आयत 25 के अन्तिम भाग की शब्दावली और व्याख्या की मांग करती है: He ''was raised because of our justification.'' आम तौर पर पौलुस ने कहा कि मसीह हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए *मरा* । 5:9 में उसने कहा कि हम ''उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाते'' हैं (देखें 3:24, 25)। परन्तु यहां उसने कहा कि मसीह हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए *''जी उठा''* था। एक प्रकार से यीशु का जी उठना ''हमारे धर्मी ठहराने'' के लिए इसलिए था, क्योंकि जी उठने के कारण हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि यीशु की मृत्यु ने परमेश्वर के क्रोध को शांत कर दिया। इस वाक्यांश में अतिरिक्त महत्व भी हो सकता है।

कई लेखक[25] इब्रानियों की पुस्तक की ओर ध्यान दिलाते हैं, जो यीशु के हमारा महायाजक होने की बात करती है (2:17; 3:1; 4:14, 15)। इब्रानियों 9 अध्याय पुराने नियम के महायाजक और यीशु में समानता बनाता है। पुराने नियम में, महायाजक पशुओं का लहू लेकर साल में एक बार तम्बू (या मन्दिर) के परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था। वह यह लहू प्रायश्चित के ढकने (संदूक का ढकना) पर छिड़कता था, जो परमेश्वर के सिंहासन को दर्शाता था। ऐसा वह लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए करता था। हमारे महायाजक के रूप में यीशु ने परम पवित्र स्थान अर्थात स्वर्ग में प्रवेश किया (देखें इब्रानियों 9:24)। पशुओं का लहू साथ लेने के बजाय उसने परमेश्वर के सिंहासन पर अपना ही का लहू चढ़ाया। यह उस ने वर्ष में एक बार नहीं बल्कि हमेशा के लिए हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए किया। महायाजक के इस काम को पूरा करने के लिए यीशु के लिए *जी उठना* और फिर अपने पिता के पास ऊपर जाना आवश्यक था। इस कारण चार्ल्स हौज ने लिखा है कि ''हमारी ओर से उसकी संतुष्टि की स्वीकृति के प्रमाण तथा उसके बलिदान की प्रासंगिकता को सुरक्षित करने के आवश्यक प्रयास के रूप में, मसीह का पुनरुत्थान अत्यंत आवश्यक था, हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए भी।''[26]

जब पौलुस ने कहा कि मसीह ''हमारे अपराधों'' के लिए मरा और ''हमारे धर्मी ठहराने'' के लिए जी उठा, तो निश्चय ही उसने यह संकेत नहीं देना चाहा कि यीशु की मृत्यु का हमारे धर्मी ठहराए जाने से कोई सम्बन्ध नहीं है या उसके जी उठने का हमारे अपराधों के क्षमा किए जाने से कोई तालुक नहीं है। इसके बजाय वह यह कह रहा था कि *दोनों* का ही हमारे उद्धार में आवश्यक योगदान है। आर. सी. बेल ने लिखा है कि इस प्रकार पौलुस ने क्रूस दिए जाने और जी उठने दोनों ... पर यीशु में नहीं ?

अब्राहम की लीक पर चलने की अपनी चर्चा को समेटने से पहले हमें एक और विषय के साथ बात करनी आवश्यक है। कई लोग रोमियों 4 का इस्तेमाल यह ''साबित'' करने की कोशिश में करते हैं कि परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होने के लिए मसीह में विश्वास करना आवश्यक नहीं है।[28] वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि ''अब्राहम ने *परमेश्वर* पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया'' (आयत 3; देखें आयत 17) और यह कि हमारे अन्दर ''अब्राहम

वाला विश्वास'' होना आवश्यक है (आयत 16)। इसके अलावा वे यह ध्यान दिलाते हैं कि जब यह अध्याय हमारे विश्वास की बात करता है तो ज़ोर *परमेश्वर* में विश्वास पर होता है (आयतें 5, 24)। जिस कारण वे निष्कर्ष निकालते हैं कि यहूदियों सहित परमेश्वर में विश्वास करने वाले सब लोग उद्धार पाएंगे, चाहे वे यीशु में विश्वास करें या नहीं।

रोमियों 3:26 में पौलुस ने साफ़ कहा कि परमेश्वर, ''जो *यीशु* पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहराने वाला'' है। ऐसे असंख्य वचन हैं, परन्तु मैं रोमियों 4 की अपनी टिप्पणियों को ''सबूत के वचन'' ही मानूंगा। पहले मुझे यह ध्यान दिलाना होगा कि पौलुस यहूदियों को उनके प्रिय अब्राहम की बात करते हुए इस अध्याय में ''विश्वास'' की समझौतावादी भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। डग्लस जे. मू ने टिप्पणी की है कि पौलुस ''हमारे विश्वास की वस्तु परमेश्वर को बहुत कम बनाता है। यहां ऐसा वह मसीही विश्वास को जहां तक हो सके अब्राहम के विश्वास जैसा बनाने के प्रयास में करता है।''[29]

दूसरा, ध्यान दें कि परमेश्वर में हमारे विश्वास की बात करने पर भी, उसके पुत्र में विश्वास को बाहर नहीं निकाला गया है। आयत 5 कहती है कि हमें ''भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास'' करना है, परन्तु धर्मी ठहराना केवल यीशु की मृत्यु के द्वारा ही होता है (5:9)। आयतें 24 और 25 में हम पढ़ते हैं कि हमारा विश्वास परमेश्वर में होना आवश्यक है ''जिसने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया।''

तीसरा, चाहे अब्राहम को यीशु की हर बात पता न हो परन्तु उसे ''वंश'' की परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास था (उत्पत्ति 22:18; गलातियों 3:16)। यानी परमेश्वर ने अब्राहम को सुसमाचार सुनाया (देखें गलातियों 3:8) और अब्रहाम ने उस पर जो परमेश्वर ने उस पर प्रगट किया था विश्वास किया। मेरा निष्कर्ष यह है कि क्रूस के इस ओर रहने वाला हर व्यक्ति, जो यीशु के बारे में किए गए परमेश्वर के प्रकाशन पर विश्वास करने से इनकार करता है, उसे विश्वास के उस महान बुज़ुर्ग अब्राहम के साथ मिलाने के योग्य नहीं है!

> हमारे समय में, परमेश्वर ने निश्चित रूप से यीशु मसीह में अपने आपको प्रगट किया है। आज यदि अब्राहम होता, तो वह मसीह में प्रगट किए गए परमेश्वर में विश्वास से अलग ढंग से उद्धार नहीं पा सकता था। ... हम ... निष्कर्ष निकालते हैं कि केवल मसीह में प्रगट किए गए परमेश्वर में इस विशेष विश्वास को मानने वालों को भी उद्धार की आशा है।[30]

सारांश

अब्राहम का विश्वास अद्‌भुत है। उसके ''पास पढ़ने को बाइबल नहीं होती थी; उसे केवल परमेश्वर की साधारण सी प्रतिज्ञा मिली थी। विश्वासी के रूप में वह लगभग केवल अकेला था, जो मूर्तिपूजक अविश्वासियों से घिरा हुआ था। वह विश्वास के लम्बे रिकॉर्ड को पीछे नहीं देख सकता था; वास्तव में वह उस इतिहास को लिखने में सहायता कर रहा था। फिर भी अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया।''[31] आर. सी. एल ने अब्राहम को विश्वास का ''पैटर्न मैन'' अर्थात ''अपने समय से अब तक सब विश्वासियों के लिए नमूना'' कहा है।[32]

रोमियों 4 में दिखाए गए अब्राहम के विश्वास को हम कैसे संक्षिप्त कर सकते हैं? जब

परमेश्वर ने कुछ कहा, तो अब्राहम ने इस पर विश्वास किया। जब यह मानवीय तर्क के विपरीत भी था, तब भी उसने विश्वास किया। जब यह उसकी समझ के प्रमाण से मेल नहीं खाता था, तब भी उसने विश्वास किया। शायद उसे समझ नहीं आ रहा था कि परमेश्वर अपने वचन को कैसे पूरा करेगा, परन्तु उसने अपने विश्वास को त्यागने से इनकार कर दिया। वह अपने विश्वास में दृढ़ रहा और अपने जीवन का आधार उसी विश्वास को बनाया। परमेश्वर ने *उस* विश्वास को देखा ''और यह [अब्राहम] के लिए धार्मिकता गिना गया'' (4:3)।

आज कई लोग यीशु में विश्वास करने का दावा करते हैं, परन्तु उनका विश्वास अब्राहम जैसे विश्वास से बहुत कम है। मुझे जीन फ्रैंकोयस ग्रेवलेट, ''महान ब्लौंडिन'' की कहानी याद आती है।

> ब्लौंडिन पतली रस्सी पर चलने वाला एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी था जो 19वीं शताब्दी के अन्त में रहता था। एक बार उसने नियागरा फाल्स के ऊपर रस्सी डाली और उसे उस पर चल कर पार किया। जब ब्लौंडिन फाल्स की अमेरिकी साइड में पहुंचा तो हज़ारों लोगों ने शोर मचा दिया।
>
> ब्लौंडिन ने भीड़ को शांत करते हुए कहा, ''मैं वापस उस रस्सी के पार जा रहा हूं, पर इस बार मैं किसी को अपने कंधों पर ले जाऊंगा क्या आप को मुझ पर विश्वास है?''
>
> लोग पुकारने लगे, ''हमें विश्वास है! हमें विश्वास है!'' परन्तु जब ब्लौंडिन ने पूछा, ''वह व्यक्ति कौन होगा?'' तो भीड़ खामोश हो गई। अन्त में एक आदमी ने कदम आगे बढ़ाया, ब्लौंडिन के कंधों पर चढ़ गया और अपने आप को फाल्स के कनेडी साइड में ले जाने के लिए दे दिया।
>
> हज़ारों लोगों ने कहा था, ''हमें विश्वास है!'' परन्तु केवल एक व्यक्ति ने उस बात के लिए जिसे उस पर विश्वास था, अपना जीवन दिया।[33]

अब्राहम का विश्वास केवल बातों से नहीं दिखाया गया था। उसने उसके लिए जिस पर उस को विश्वास था, अपना जीवन दे दिया। उसने परमेश्वर की बात को पूरा करने के लिए अपने आपको दे दिया। यदि आप अब्राहम के विश्वास की लीक पर चल रहे हैं तो आप अपने आप को देने के लिए तैयार होंगे ताकि आप वह कर सकें जिससे प्रभु प्रसन्न हो। आप मसीह में और उसके बलिदान में विश्वास करेंगे (1:16)। आप अपने विश्वास को मन फिराव और अंगीकार से दिखाएंगे (2:4; 10:9)। आप बपतिस्मे में मसीह के साथ एक होना चाहेंगे (देखें 6:3-6)। परमेश्वर की संतान के रूप में आप ''जीवन के नये पन में'' चलने की कोशिश करेंगे (6:4)। अब्राहम के विश्वास की तरह आप के विश्वास में भी कमी रहेगी, और आप का आज्ञापालन सिद्ध नहीं होगा, तौभी परमेश्वर आपके विश्वास को भी देखेगा और इसे आपके लिए धार्मिकता गिनेगा (4:23, 24)!

टिप्पणियां

[1]ये बातें विशेषकर यहूदियों को कही गई थीं परन्तु इसकी सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। [2]फादर्स डे अमेरिका में छुट्टी का दिन है जिसमें जून के तीसरे रविवार हर साल पिताओं को सम्मान दिया जाता है। [3]यहां यह

मान्यता हो सकती है कि पौलुस ने इब्रानियों की पुस्तक नहीं लिखी, जिसमें प्रसिद्ध ''विश्वास है'' की बात है (इब्रानियों 11:1)। [4]रिचर्ड ए. बैटे, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड बाइबल कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 61. [5]KJV में ''quickens'' है जो ''जीवित करता'' के अर्थ वाला पुराना अंग्रेज़ी शब्द है। [6]विश्वास ''अल्प'' (मत्ती 14:31; 16:8) या ''बहुत'' (मत्ती 8:10, 26), ''मरा हुआ'' (याकूब 2:17, 26) या ''जीवित'' हो सकता है। [7]''पौलुसी'' का अर्थ है पौलुस से जुड़ा। [8]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू दि रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 210. *Elpis* के रूप नये नियम में 53 बार मिलते हैं, जिनमें से 36 बार पौलुस के लेखों में हैं। [9]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 37. [10]''निर्बल'' का अनुवाद *astheneo* से किया गया है जो शारीरिक बीमारी या इसके जैसी किसी बात का संकेत है, परन्तु शब्द का इस्तेमाल किसी भी प्रकार की निर्बलता के लिए किया जा सकता है। (मौरिस, 211, एन. 84.)

[11]वही, 211. [12]उत्पत्ति 25:1-6 कहता है कि अब्राहम के कतूरा से पुत्र थे यदि अब्राहम इतना बूढ़ा था तो उसकी संतान नहीं हो सकती थी तो यह कैसे सम्भव है शायद यह विवरण क्रमानुसार नहीं हैं और कतूरा से अब्राहम की संतान उसके जीवन के आरम्भ में थी। हो सकता है कि वही ईश्वरीय आशीष जिसने अब्राहम को इसहाक का पिता होने के योग्य बनाया बाद में और संतान उत्पन्न करने के योग्य भी बनाया। [13]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 92. [14]डब्ल्यू ई. वाइन. मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि. *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 605. [15]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 139. ''कर्तृ वाचक'' का इस्तेमाल तब किया जाता है जब वाक्य का कर्त्ता *काम कर रहा* (कुछ कर रहा; उदाहरण के लिए, ''वह ले गया'') होता है। ''कर्म वाचक'' का इस्तेमाल तब होता है जब *कर्त्ता के ऊपर* काम किया जाता है (उससे कुछ किया जाता; उदाहरण के लिए उसे जे जाया गया)। [16]किसी शब्द के ''सम्प्रदान कारक'' में होने पर उपसर्ग का इसके सामने होना आवश्यक है। यदि उपसर्ग वचन में नहीं है, तो यह संदर्भ के आधार पर दिया जाना आवश्यक है। [17]मौरिस, 212. [18]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 328-29, 423-24. [19]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल एण्ड फ्रैडरिच, अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रामिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 871 में जी. डेलिंग ''*plērophorēō*.'' [20]डोनल्ड ग्रे बर्नहाउस, *गॉड 'स रेमिडी: रोमियों 3:21-4:25* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1954), 311-12 से लिया गया। बार्नहाउस ने रोमियों 4 पर अपने अध्ययन में इस्तेमाल किए गए ''अब्राम'' के अर्थ से थोड़ा अलग दिया।

[21]चार्ल्स आर. स्विंडल, *कमिंग टू टर्म्स विद सिन: ए स्टडी ऑफ रोमन्स 1-5* (अनाहेम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फॉर लिविंग, 1999), 74 से लिया गया। [22]सी. ई. बी. क्रेनफील्ड, *रोमन्स: ए शॉर्टर कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 96. [23]हमने एक शब्द *paraptomia* (*pipto* ["गिरना"] से, *para* से गहराया गया) का अध्ययन किया जिसका अनुवाद 3:23 की हमारी चर्चा में कई बार ''अपराध'' किया गया है। यहां थोड़ा सा अलग इस्तेमाल है। इस शब्द का अर्थ ''गिर जाना'' है। [24]कई लेखक यह सुझाव देते हैं कि पौलुस आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले ''विश्वास कथन'' से उद्धृत कर रहा था। ऐसा था या नहीं, हमें नहीं मालूम। हमें इतना मालूम है कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए एक आदमी ने इसे लिखा, और इसलिए यह प्रभु की ओर से है। [25]उदाहरण के लिए जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एंड फिलिप वाई. पैंडलटन, *थस्सलोनियंस, कोरंथियंस, गलेशियंस, रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 330. [26]चार्ल्स हॉज, *रोमन्स,* द क्रॉसवे क्लासिक कमैंट्रीज़ (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 125. [27]आर. सी. बेल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 41. [28]मुझे आश्चर्य होता है कि ''बिन सिखाए और अस्थिर'' लोग पौलुस की शिक्षाओं को ''बिगाड़ने'' के लिए कहां तक चले जाएंगे (देखें 2 पतरस 3:15, 16)। [29]डग्लस जे मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 165. [30]वही, 167.

[31]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोजिस्टरी कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 526. [32]बेल, 36-37. [33]हैरल्ड टी. ब्रायसन, ''फ़ेथ,'' *इलस्ट्रेटिंग पॉल 'स लैटर्स टू द रोमन्स,* संक. जेम्स. एफ. हाईटावर (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1984), 31-32.